NOTES

न लब हिले हैं न आँखों में अश्क आए हैं
हम आज कितने सलीके से मुस्कुराए हैं।

पलकें भी चमक उठी हैं सोते में हमारी
आँखों को अभी ख्वाब छिपाने नहीं आते।

आया ही था ख्याल की आँखें छलक पड़ी
आँसू किसी की याद से कितने करीब थे।

वो भी क्या मज़े की है ज़िन्दगी
जो सफ़र में गुज़र चले
नहीं मंज़िलों में वो दिलकशी
मुझे फिर सफ़र की तलाश है।

कमाले-बुज़दिली है पस्त होना अपनी आँखों में
अगर थोड़ी-सी हिम्मत हो तो फिर क्या हो नहीं सकता।

हौसलों की बात आई है तो सुन लीजिए
सिर्फ मेरे नाम से बदले हैं दूकानों के रुख।

उम्रभर ख्वाब की दुनिया में रहे हैं जो 'नियाज'
अब जो जागे हैं तो जीने को सज़ा कहते हैं।

हम भी दरिया हैं हमें अपना हुनर मालूम है
जिस तरफ़ भी चल पड़ेंगे रास्ता हो जाएगा।

अपने ग़म लेके कहीं और न जाया जाए
घर में बिखरी हुई चीज़ों को संवारा जाए।